•जरूरी बात...

घर के दरवाजे ...

बात चाहे सौभाग्य की करें या फिर दुर्भाग्य की, व्यक्ति के जीवन में दोनों का ही प्रवेश घर के मुख्य द्वार से होता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के दरवाजे का संबंध व्यक्ति के सौभाग्य से जुड़ा हुआ होता है। कहा जाता है कि घर के मुख्य दरवाजे के आसपास अगर टूटे-फूटे बर्तन या कोई भारी चीज रखी हुई हो तो ऐसे घर में देवी-देवता प्रवेश नहीं करते हैं। वास्तु के अनुसार घर बनवाते वक्त व्यक्ति को कई चीजों को खास ध्यान रखना पड़ता है, जिनमें से एक है घर के दरवाजे। वास्तु के अनुसार किस दिशा में घर के दरवाजे होने चाहिए। आइए जानते हैं। वास्तुशास्त्र से जुड़े घर के दरवाजों के लिए बताए गए नियम-

- यदि आपके घर का दरवाजा पूर्व दिशा में है तो वास्तु के अनुसार यह शुभ है। पर, इस बात का खास ध्यान रखें कि दरवाजे के सामने कोई अवरोध नहीं हो, वरना व्यक्ति के कर्ज में डूबने की आशंका होती है।
- कोशिश करें कि दरवाजा पश्चिम दिशा में नहीं हो। ऐसा होने से घर की सुख-समृद्धि खत्म होने लगती है। वहीं, दक्षिण दिशा में दरवाजा होने से परिवार के सदस्यों को लंबे समय तक

आर्थिक परेशानियों से जूझना पड़ता है।

- अगर आपके घर का दरवाजा आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व का मध्य भाग) में है तो यह आपके परिवार के सदस्यों की सेहत पर बुरा असर डाल सकता है।
- ईशान दिशा (उत्तर-पूर्व) का दरवाजा उत्तर दिशा की तरह ही शुभ फल देता है, बस इस बात का ध्यान रखें कि उसके सामने किसी भी प्रकार का वास्तु दोष नहीं हो।
- अगर घर का दरवाजा वायव्य दिशा में हो तो प?ैसी से वाद-विवाद होने की आंशका बनी रहती है। इस दिशा में दरवाजा होने से अकसर जीवन में अशांति और तनाव फैला रहता है।

•रिश्ते...

दूर होगी तकरार...

विवाह के बंधन को सबसे अनमोल रिश्ता माना गया है। कहा जाता है कि विवाह का नाता सात जन्मों तक के लिए जुड़ जाता है। मगर कई बार पति-पत्नी के बीच विवादों के कारण उन्हें एक जन्म ही साथ बिताना नागवार गुजरता है। दोनों के बीच बढ़ती खटास रिश्ते को पूरी तरह से खत्म कर देती है। बात-बात पर क्लेश होने से दंपत्ति के बीच प्यार और अपनापन ही नहीं रहता है। अगर आपके विवाह में भी उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी हुई है तो आप कुछ मंत्रों की मदद से अपने दांपत्य जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

सूर्योदय से पहले स्नानादि कर लें। इसके बाद पास के किसी मंदिर में जाएं और शिवलिंग पर जल चढ़ाएं। साथ ही यहां बताये मंत्र का जप करें।

ऊं नमः संभवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।

दांपत्य जीवन में चल रही खटपट को दूर करने के लिए कई लोग टोने-टोटकों का सहारा लेते हैं। वहीं माना जाता है कि यदि पूरे विधि विधान के साथ यहां बताए मंत्र का जाप किया जाए तो इससे पति-पत्नी के बीच की दूरी कम होती है। साथ ही प्रेम में इजाफा होता है। सुबह उठ जाएं। स्नानादि करके किसी एकांत जगह पर आसन लगा लें। अपना मुंह पूर्व दिशा की तरफ करके बैठ जाएं। अपने सामने पार्वती माता की प्रतिमा या चित्र रखें। अब उनकी स्तुति करते हुए 21 बार नीचे दिए इस मंत्र का जप करें।

अक्ष्यौ नौ मधुसंकाशे अनीकं नौ समंजनम्। अंतः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ सहासति।।

विवाह के बाद कई दंपत्तियों के बीच तालमेल की कमी देखने को मिलती है। वैवाहिक सुख पाने के लिए सुबह स्नानादि के पश्चात भगवती दुर्गा की प्रतिमा के सामने दीप और अगरबत्ती जलाएं। उन्हें पुष्प अर्पित करें और नीचे दिए इस मंत्र का जाप 108 बार करें। मां की कृपा से आपकी शादीशुदा जिंदगी में फिर से प्रेम और सुख शांति का वास हो जाएगा।

धां धीं धूं धूर्जटे! पत्नी वां वीं वूं वाग्धीश्वरि। क्रां क्रीं क्रूरूं कालिका देवि! शांत शीं शूं शुभं कुरू।।

महाअष्टमी के दिन प्रातः उठ कर स्नान करने के बाद माता की प्रतिमा को अच्छे वस्त्रों से सुसज्जित करें और देवी भगवती की पूरे विधि और विधान से पूजा करनी चाहिए।

मां के पूजन के लिए लाल फूलों का उपयोग करना चाहिए। पूजा के बाद मां को खीर, हलुआ और मिठाइयों का भोग लगाएं। इस दिन कन्या पूजन का भी विशेष महत्त्व है...

महागौरी की पूजा...

नवरात्र के आठवें दिन माता के आठवें स्वरूप महागौरी की पूजा की जाती है। अष्टमी की तिथि के दिन महागौरी मां दुर्गा की पूजा से भक्तों के सभी तरह के पाप और कष्ट दूर हो जाते है।

अष्टमी के दिन कुंवारी कन्याओं को भोजन करवाया जाता है। महाअष्टमी के दिन प्रातः उठ कर स्नान करने के बाद माता की प्रतिमा को अच्छे वस्त्रों से सुसज्जित करें और देवी भगवती की पूरे विधि और विधान से पूजा करनी चाहिए। मां के पूजन के लिए लाल फूलों का उपयोग करना चाहिए। पूजा के बाद मां को खीर, हलुआ और मिठाइयों का भोग लगाएं। इस दिन कन्या पूजन का भी विशेष महत्त्व है। कन्या पूजा में इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कन्याओं की उम्र 2 से 12 वर्ष तक हो। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन घर में हवन करवाना बड़ा ही शुभ होता है। पूजा करने के बाद इन मंत्रो का 108 बार जाप अवश्य करें।

ऊं महागौर्यः नमः।
ऊं नवनिधि गौरी
महादैव्यै नमः।

हर मंत्र का जप करने से पहले संकल्प लें।

कन्या पूजनः अष्टमी के दिन कन्या पूजन का भी विधान है। वैसे, कन्या पूजा अष्टमी नवमी दोनों दिन किया जाता है, परन्तु धार्मिक मान्यताओं के अनुसार अष्टमी पर कन्या पूजन करना श्रेष्ठ रहता है। कन्याओं को देवी माता जी के तुल्ये आदर दिया जाता है। कन्या पूजन में 9 कन्याओं का पूजन श्रेष्ठ रहता है। सर्वप्रथम कन्याओं के पांव धोएं फिर उन्हें टीका चंदन लगाकर उनकी आरती करें। कन्याओं कि आरती करते समय मन में मां के नौ रूपों का ध्यान करें क्योंकि ये 9 कन्याएं मां के 9 रूपों को दर्शाती हैं। फिर कन्याओं को भोजन करवा कर कन्याओं को दक्षिणा भी दी जाती है। ऐसा करने से महामाया भगवती प्रसन्नता से हमारे मनोरथ पूर्ण करती हैं।

दुर्गा अष्टमी की रात को विशेष पूजन की जाती है। इससे मां दुर्गा प्रसन्न होती है और सभी मनोकामना को पूरी करती है। इतना ही नहीं इस पूजा से आपके जीवन में चल रही कठिन समस्याएं और दुर्भाग्य खत्म हो जाता है। इतना ही मां की नजर पड़ने से घर में धन धान्य के भंडार भर जाते हैं।

दुर्गा अष्टमी की रात करें यह अचूक उपाय

दुर्गाष्टमी की रात में किसी प्राचीन दुर्गा मंदिर में जाकर देवी मां के चरणों में 8 कमल के पुष्प चढ़ाने से माता रानी शीघ्र प्रसन्न हो जाती है।

दुर्गा अष्टमी की रात में अपने घर के मुख्य दरवाजे पर रात 12 बजे गाय के घी का एक दीपक जलाने से सारे दुर्भाग्य दूर हो जाते हैं।

अष्टमी की रात को अपने घर में या दुर्गा मंदिर में दुर्गाष्टमी का पाठ करने से घर परिवार में सदैव सुख-शांति बनी रहती है।

अष्टमी की रात महागौरी के स्वरूप को दूध से भरी कटोरी में विराजित कर चांदी का सिक्का चढ़ाएं, और दूसरे दिन से उस सिक्के को हमेशा अपनी जेब में रखें। इससे धन आने के स्त्रोत बढ़ने लगेंगे।

दुर्गा अष्टमी को सूर्यास्त के ठीक बाद किसी वेदपाठी ब्राह्मण की कुंवारी कन्या को उसकी पसंद के कपड़े दान करें। रात को एक पान में गुलाब के फूल की 7 पंखुड़ियां रखकर मां दुर्गा को अर्पित करने से मां लक्ष्मी हमेशा आपके घर में निवास करने लगेगी।

दुर्गा अष्टमी को सूर्यास्त के बाद 11 सुहागिनों महिलाओं को लाल चूड़ियां एवं सिंदूर भेंट करने से पति की आयु लंबी होगी। उन पर आने वाले सभी संकट नष्ट हो जाएंगे।

दुर्गा अष्टमी की रात देवी मंदिर गुपचुप तरीके से माता रानी के सोलह शृंगार भेंट करने से जीवन में आने वाली समस्त बाधाएं दूर हो जाएगी।

वहीं दुर्गा अष्टमी की रात में लाल कम्बल के आसन पर बैठकर एक हजार बार ***ऊं ऐं ह्रीं क्लीं महागौर्यै नमः*** का जप करें।

•घर-परिवार में...

सब समस्या होगी दूर...

घर-परिवार की खुशियों के बिना हमारी हर सफलता और उपलब्धि अधूरी है। घर में अगर अपनों से मनमुटाव है तो यह हमारी जिंदगी और हमारी कार्यक्षमता पर सीधा प्रभाव डालता है। अपनों के बीच हमेशा प्रेमभाव बना रहे इसके लिए वास्तु में कुछ आसान उपाय बताए गए हैं। परिजनों के साथ मिलकर किसी भी व्रत को करना चाहिए। घर में सुबह और शाम भगवान की पूजा अवश्य करनी चाहिए। घर में पूजा घर है तो इसमें नियमित रूप से पूजा करें। घर के कमरों का प्रयोग पूजा-अर्चना के लिए नहीं करें। वर्ष में कम से कम दो बार घर में हवन-यज्ञ अवश्य कराएं। घर के हर कमरे में फिटकरी का टुकड़ा रख दें। इससे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा और अपनों के बीच प्रेमभाव बढ़ेगा। सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह के लिए घर को सदैव स्वच्छ रखें। मकड़ी के जाले, धूल-गंदगी को साफ करते रहें। घर में अगर पौधे लगाए हुए हैं तो इनको नियमित रूप से पानी दें। जो पौधा सूख रहा हो तो उसे तुरंत यहां से हटा दें। बुजुर्गों की सेवा करें। घर की बैठक में भगवान विष्णु का चित्र लगा सकते हैं।

•सूर्योदय...

❑ सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहूर्त का समय अध्ययन के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। सूर्योदय के समय घर के दरवाजे और खिड़की खुली रखें। रसोईघर एवं स्नानघर में भी सूर्य का प्रकाश पहुंचे ऐसी व्यवस्था करें। बच्चों के पढ़ाई वाले स्थान पर सूर्यदेव का चित्र लगाएं। घर की पूर्व दिशा में सात घोड़ों के रथ पर सवार सूर्यदेव का चित्र लगा सकते हैं। प्रतिदिन सुबह उठने के पश्चात सूर्यदेव का दर्शन कर उनका स्मरण अवश्य करना चाहिए। बड़े बुजुर्गों का आदर करें।